तारा

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

समीर पुरानी किताबों की दुकान के बाहर खड़ा हुआ था उसने आठवाँ दर्जा पास करलिया था स्कूल खुलने वाले थे अब उसे नवीं क्लास में जाना था उसके पास आठवें दरजे की एक हिन्दी किताब बची रह गई थी उसने सोचा इसे बेच दिया जाये उसके दाम में अच्छी खसी मूंगफ़ली मिल सकती है उसने वह किताब दुकानदार को पकड़ा दी दुकानदार ने उसने किताब को उलटा पलटा कर देखा और अन्दर के पन्ने पलट कर देखे और किताब वापस कर दी ये किताब वह नहीं ख़रीद सकता किताब काफ़ी पुरानी थी और अन्दर कुछ पन्ने फटे हुये भी थे। वह वहाँ से वापस ही आ रहा था कि एक दूसरा आदमी दुकानदार से पूछ रहा था कि उसके पास आठवें की हिन्दी साहित्य की किताब है। दुकानदार किसी दूसरे गाहक से बात कर रहा था। समीर ने उस आदमी से कहा आठवें की हिन्दी साहित्य मेरे पास है आप मुझ से खरीद लीजिये। उस आदमी ने किताब पकड़ ली थी और फिर उसने अपने पास खड़ी हुई लड़की को पकड़ा दी देखो तारा बेटा इसी किताब को ले लें। समीर अब उस लड़की को देख रहा था उसने आज तक इतनी अच्छी लड़की नहीं देखी थी। नवीं क्लास के लड़के को इतनी तमीज़ नहीं कि वह लड़कियों के हुस्न के बारे में तजज़िया कर सके की मख़मली होंट या झील सी आखें वगैरा वगैरा उसे बस तारा बहुत अच्छी लगी सिमटी हुई अपने बाप के पीछे खड़ी थी। तारा किताब को उलट पलट कर देख रही थी। और वोह तारा को किताब के पन्ने पलटते देख रहा था और तारा पन्ने पलटते पलटते एक जगह रूक गई पन्ने फटे हुये थे और तारा ने नज़रें उठा कर उसकी तरफ देखा वोह भी तारा ही तरफ़ देख रहा था पता नहीं तारा ने उसकी आखों में क्या देखा वोह अपने बाप से बोली जी बाबू जी किताब ले लीजिये। कितने की किताब है तारा के बाबूजी उस से पूछ रहे थे। कुछ भी दे दीजिये समीर ने जवाब दिया। उसने सोचा नई किताब तो दो रूपये की मिलती है इस किताब के आठ आने भी मिल जाये तो बहुत हैं। तारा के बाबूजी ने उसे एक रूपया पकड़ा दिया। जी मेरे पास टूटे पैसे नहीं हैं आप को देने के लिये। कोई बात नहीं आप एक रूपया रख लीजिये। उसने एक रूपया जेब में रख लिया वो अपने को उस वक़्त बहुत दौलतमंद महसूस कर रहा था। शायद एक रूपया इकठ्ठा उसे पहले कभी नहीं मिला था। पाकिट मनी के नाम पर उसे चवन्नी अठन्नी कभी कभी मिल जाती थी। उस ने साइकिल के पैडल पर पैर मारा और हमेशा की तरह उसकी साइकिल की चैन उतर गई वह साइकिल की चैन चढ़ाने लगा और चैन की ग्रीस उसके हाथों में लग गइ उस ने पलट कर किताबों की दुकान की तरफ़ देखा तारा उसी की तरफ देख रही थी पता नही क्यों उस का दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा और उसके माथे पर पसीना झलकने लगा वह घबराहट में उसी ग्रीस लगे हुये हाथ से पसीना पोछने लगा। सारी ग्रीस उसके चेहरे पर लग गई थी तारा अपनी मुस्कुराहट नहीं रोक पाई थी। वह अपने घर लौट आया तारा उसे बहुत अच्छी लगी थी। जानते बूझते उसने फटी हुई किताब ख़रीद ली।

दूसरे दिन समीर स्कूल गया था और इंटरवल में मूंगफली के ठेले के पास खड़ा था। करारी मूंगफली उसने 100 ग्राम मूंगफली का आर्डर दे दिया। उसने तारा के बाबूजी का दिया हुआ एक रूपये का नोट जेब से निकाला था करारी मूंगफली की तरह नोट भी करारा था। पता नहीं क्या सोच कर उसने नोट जेब में वापस रख लिया। उसने मूंगफली का आर्डर कैन्सिल कर दिया था।

धीरी धीरे वक़्त गुज़रने लगा। छः साल साल गुज़र गये। यूनिवर्सिटी में स्वेता से उसकी मुलाक़ात हो गई। समीर साइंस का स्टूडेन्ट था और स्वेता आर्ट्स की स्टूडेन्ट थी उन दोनों के प्यार को उन के घर वालों की Approval भी मिल गई थी। नतीजे में दोनों की शादी हो गई। वक़्त गुज़रता गया, टीनू मीनू भी घर में आ गये। एक दिन वह स्वेता से पूछ रहा था। स्वेता बताओ तुम तो इंग्लिश लिटरेचर की स्टूडेन्ट रही हो। सारा लिटरेचर Romanticism वगैरा से भरा हुआ है। ये बताओ लव ऐट फर्स्ट साइट। पहला प्यार। या फिर लड़कपन का प्यार उन चीज़ों की कोई सिगनीफीकेस है। क्यों ऐसा क्यो पूछ रहे हो दाल में कुछ काला है। स्वेता हंसी थी, वह भी हंस दिया था और बोला क्या तुम्हे मेरे प्यार में कभी कोई कमी नज़र आई। स्वेता बोली नहीं कभी नहीं मैं तो मज़ाक़ कर रही थी। लेकिन मैं तुम्हें एक बात बताने जा रहा हूँ तु म उसे मेरा कानफेशन भी समझ सकती हो। फिर उसने स्वेता से तारा के बारा में बताया। जिस से उसने कभी बात नहीं करी और तक़रीबन 20 साल पहले एक किताबों की दुकान पर सिर्फ चन्द मिनट के लिये देख था और आज तक उसे भूल नहीं पाया। हालांकि उसने स्वेता से भी दिल खोलकर प्यार किया है। उसके माने प्यार सिर्फ एक बार होता है या सिर्फ एक से होता है वगैरा वगैरा की थ्योरी यहाँ फेल हो रही है। समीर ने स्वेता से शादी के 15 साल बाद और टीनू मीने के आ जाने के बाद अपने उस प्यार का इक़रार कर लिया था। उसने स्वेता से ये भी बताया कि वह एक रूपया भी उसने खर्च नहीं किया जो किताब बेचने पर उसे मिला था। वह आज भी उसे पास है। वह ये सब कह कर स्वेता की तरफ़ देखने लगा। उसे अंदाज़ा था स्वेता को अफ़सोस ज़रूर हुआ होगा। ये कैसा आदमी है उसके साथ पिछले 15 सालों से प्यार का नाटक कर रहा है। वह स्वेता को गौर से देख रहा था। स्वेती की आखों से टप टप आसू टपक रहे थे। उसे स्वेता को नहीं बताना चाहिये था उसे सदमा पहुंचा है समीर सोचने लगा। स्वेता ने अपने आँसू पोछे थे अब वह समीर की तरफ देख रही थी। मुसलसल उसकी आखों में हलकी सी मुस्कुराहट के साथ, सुनो समीर तुम ने अपने पहले प्यार का इक़रार कर दिया। तो फिर मैं भी पहले प्यार का इक़रार करती हूँ। वह फटी किताब आज भी मेरे पास महफ़ूज़ है। उसे मैं अपने से अगल नहीं कर पाई।

★★★